# दलहन उत्पादन एवं संरक्षण तकनीक प्रषिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र नकतरा, रायसेन (म.प्र.) व दलहन विकास निदेषालय, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में कृषक, कृषक समूह एवं कृषक संगठन हेतु दो दिवसीय ''दलहन उत्पादन एवं संरक्षण तकनीक'' प्रषिक्षण कार्यक्रम दिनांकः 4 व 5 नवम्बर, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, नकतरा, रायसेन (म.प्र.) मे आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य अतिथि डाॅ. ए.के. तिवारी, निदेषक, दलहन विकास निदेषालय, भोपाल, की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर डाॅ. ए.के. षिवहरे, सहायक निदेषक, श्री विपिन कुमार, सहायक निदेषक, डाॅ. डी.आर. सक्सेना, प्रधान वैज्ञानिक, डाॅ. संदीप शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, सीहोर कृषि महाविद्यालय, डाॅ. ए.के. अस्थाना, निदेषक, सहकारी प्रबंध संस्थान, श्री हरि सिंह, सेवानिर्वत्त अपर संचालक कृषि विभाग व कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के कार्यक्रम समन्वयक डाॅ. स्वप्निल दुबे, मुख्य रूप से उपस्थित थे।

प्रषिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती का पूजन अर्चन व दीप प्रज्वलन कर किया गया। डाॅ. ए.के. तिवारी ने प्रषिक्षण के दौरान रबी दलहनी फसलों के उत्पादन पर जोर देते हुए कहा कि मध्यप्रदेष देष में रबी दलहन व चना उत्पादन मे अग्रणी है व विभिन्न योजनाओं जैसे दलहन उत्पादन कार्यक्रम ए.3.पी., राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिषन दलहन कार्यक्रमों के माध्यम से कृषक जुड़कर दलहनी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने की अपार सम्भावनाऐं हैं।

डाॅ. स्वप्निल दुबे द्वारा वर्तमान परिवेष को ध्यान में रखते हुए किसान भाई चना की उन्नत किस्में जैसे जे.जी.-12, जे.जी.-11, जे.जी.- 63, जे.जी.-14, जे.जी.- 16, जे.जी.- 130, आर.व्ही.जी.-202, व मसूर की

जे.एल.-1, जे.एल.-3. मटर की आर्किल, वॉर्नविले, पी.एस.एम.-3, पी.एस.एम.-5 किस्मों की तकनीकी जानकारी दी।

खरीफ दलहनी फसलों के अन्तर्गत मूंग की उन्नत किस्म जे.एम.-721, टी.जे.एम.- 3, हम-1, हम-9, हम-12, पूसा विषाल, उड़द की जवाहर उड़द-2, जवाहर उड़द-3, जवाहर उड़द-86, षेखर-2, पी.यू-30, पी.यू-31 व अरहर की टी.जे.टी.-401, टी.जे.टी.-501, राजीव लोचन की विस्तारपूर्वक तकनीकी जानकारी दी गई।

खरीफ मौसम में तुअर उत्पादन की एस.पी.आई. (धारवाड़ पद्धति) के अन्तर्गत पॉलीथीन बैग में रोपा तैयार करने की विधि, पौध से पौध की दूरी 90 से.मी., कतार से कतार की दूरी 60 से.मी. व तुअर को खेत में लगाने के 20 दिन बाद, तुअर की टॉपिंग करने व उन्नत कृषि क्रियाओं को समय से अपनाकर अधिक उत्पादन की जानकारी दी गई।
खरीफ दलहनी व रबी दलहनी फसलों के अधिक उत्पादन के लिए रेज्ड वैड तकनीक व ब्रॉड वैड फरो तकनीक का उपयोग कर बुवाई की तकनीकी जानकरी दी गई।

डॉ. डी.आर. सक्सेना, प्रधान वैज्ञानिक ने दलहन फसलों में उत्पादन वृद्धि हेतु अमोनियम मॉलिब्डेट 1 ग्राम/किलो बीज व राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर 5 ग्राम/किलो बीज से उपचारित कर बुवाई की जानकारी दी।

दलहनी फसलों में उक्टा नियंत्रण हेतु उक्टा निरोधी प्रजातियों का चयन, नीम की निम्बोली 75 किग्रा/है, ट्राइकोडर्मा विरिडी से बीजोपचार 5 ग्राम/किलो बीज, चना के साथ अंतवर्तीय फसल के रूप में अलसी व सरसों को लगा के किया जा सकता है।

डॉ. संदीप शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक ने दलहनी फसलों के प्रमुख कीट, चने की इल्ली, कटुआ इल्ली, मसूर में माहों, मूंग व उड़द में सफेद मक्खी, अरहर में फली छेदक कीट व फल मक्खी के बारे में विस्तारपूर्वक कृषकों को बताया व उनके नियंत्रण सम्बन्धी तकनीकी जानकारी दी।

श्री प्रदीप कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन द्वारा दलहनी फसलों में एकीकृत कीट नियंत्रण के अंतर्गत ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, टी आकार की खूंटी 25 प्रति हैक्टेयर, फैरोमेन ट्रेप 12 प्रति हैक्टेयर, लाइट ट्रेप, चिप-चिपे पीले प्रपंच, नीम आॅयल, एन.पी.व्ही. वायरस 250 एल.ई. प्रति हैक्टेयर का उपयोग कर नियंत्रण की विस्तार पूर्वक जानकारी कृषकों को दी।

श्री सुनील केथवास, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन द्वारा दलहनी फसलों के भण्डारण के समय उचित नमी, तापक्रम, आद्रता को ध्यान में रखते हुए पूसा बिन के उपयोग की तकनीकी जानकारी दी गई।

कु. लक्ष्मी चक्रवर्ती, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन द्वारा दलहनी फसलों के मूल्य संवर्धन, कुटीर उद्योग, दाल बनाने की विधियां, सफाई, ग्रेडिंग, मिलिंग इत्यादि सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दी गई।

डाॅ. ए.के. अस्थाना, निदेषक ने दलहनी फसलों के उत्पादन के साथ-साथ उनका मूल्य संवर्धन करके कृषक अधिक आय अर्जित कर अपनी आर्थिक दषा को सुधार करें। कार्यक्रम का संचालन डाॅ. सर्वेष त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस प्रषिक्षण कार्यक्रम में ग्राम नकतरा, खण्डेरा, मुगालिया, डाबर, देहगांव, पठारी, आदि ग्रामों के कृषकों ने भाग लिया। प्रषिक्षण के अंत में उपस्थित कृषकों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

कार्यक्रम में के.वी.के., रायसेन के वैज्ञानिक डाॅ. सर्वेष त्रिपाठी, श्री प्रदीप कुमार द्विवेदी, श्री आस्तिक झा, श्री रंजीत सिंह राघव, डाॅ. अंषुमान गुप्ता श्री सुनील केथवास, श्री पंकज भार्गव, कु. लक्ष्मी चक्रवर्ती एवं श्री राजकुमार माकोड़े उपस्थित थे।

रायसेन। कार्यक्रम के दौरान मौजूद कृषि वैज्ञानिक।

दलहन उत्पादन को लेकर प्रशिक्षण दिया गया।